हिंदी व्याकरण

विषय – वर्णमाला (Alphabet)

प्रमोद कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
सरिया कॉलेज, सरिया

वर्णमाला (Alphabet)

- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है। वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर और अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण है।
  (मुख द्वारा उच्चरित को ध्वनि, जबकि लिखित रूप को वर्ण कहते हैं)

- **वर्ण :**
- भाषा की की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। इस ध्वनि को 'वर्ण' कहते हैं। वर्ण वह छोटी-सी-छोटी ध्वनि है, जिसके खंड या टुकड़े नहीं किये जा सकते।
- **वर्णमाला :**
- वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।
  कुल वर्णों की संख्या 52 है -

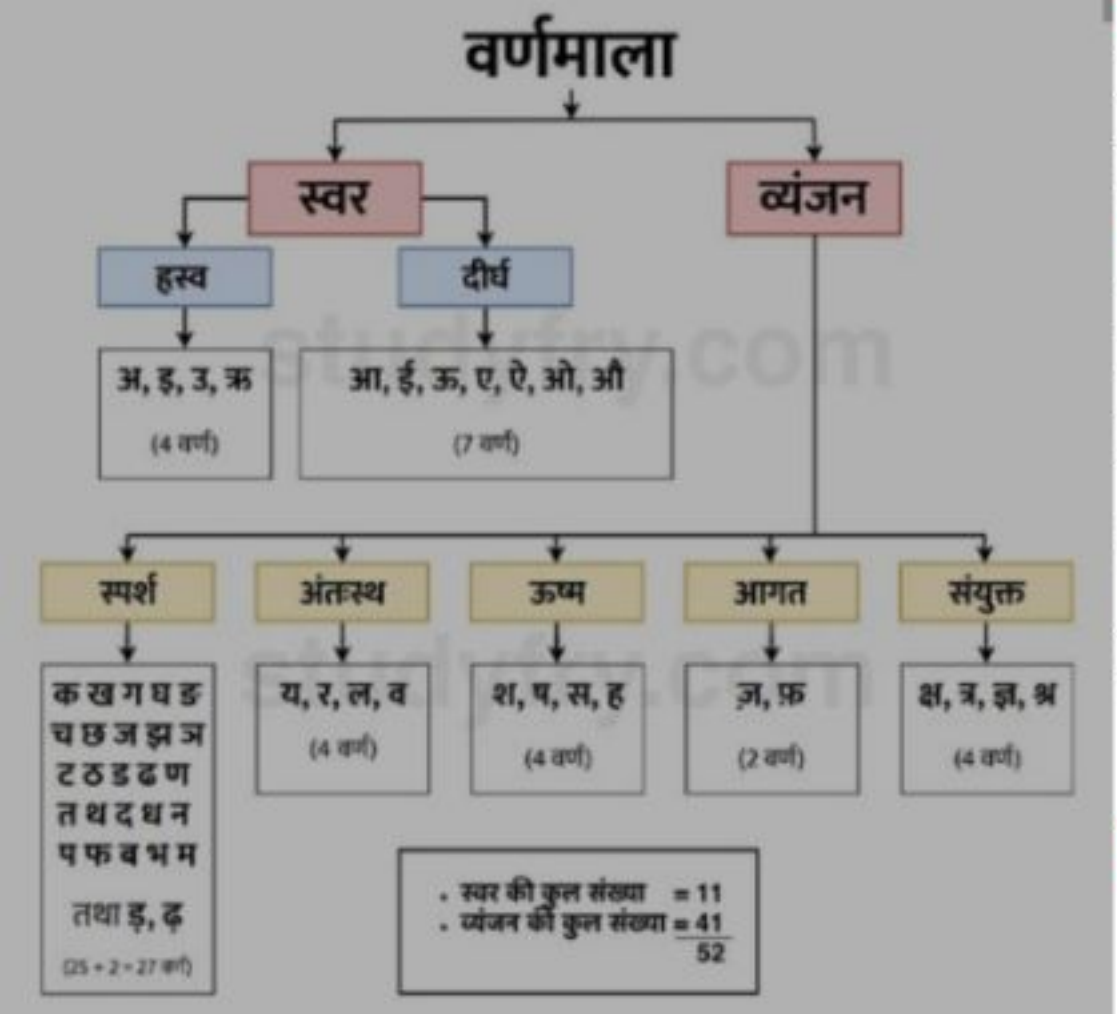

◆ स्वर वर्ण- आधुनिक हिंदी में उच्चारण की दृष्टि से कुल 11 स्वर हैं – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ। जबकि परम्परागत रूप से स्वरों की संख्या 13 मानी गई है– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ, अं, अः (13)

◆ व्यंजन वर्ण –

क वर्ग – 5
च वर्ग – 5
ट वर्ग – 5
त वर्ग – 5
प वर्ग – 5 (ये सभी (25) स्पर्श व्यंजन हैं)
अंतःस्थ – 4 (य, र, ल, व)
उष्म – 4 (श, ष, स, ह)
= 33 (मूल व्यंजन)
द्विगुण व्यंजन – 2 (ड़, ढ़)
संयुक्त व्यंजन – 4 (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र
अनुस्वार – (ं) विसर्ग – (:) – 2 (अयोगवाह)
= 41

कुल वर्ण – 11+41=52

(नोट - आगत व्यंजन – 2 (ज़, फ़))

(* एकल व्यंजन ही मूल व्यंजन कहे जाते हैं)

वर्ण दो प्रकार के होते हैं-

• स्वर वर्ण –

जिनका उच्चारण बिना अवरोध अथवा विघ्न-बाधा के होता है अर्थात् स्वतंत्र रूप से बोले जानेवाले वर्ण 'स्वर' कहलाते हैं।

हिंदी में स्वर वर्णों की संख्या 11 मानी जाती है, जिसका वर्गीकरण इस प्रकार है :-

ह्रस्व स्वर – अ, इ, उ, ऋ (एकमात्रिक)

दीर्घ स्वर– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ (द्विमात्रिक)

प्लुत स्वर – ... जैसे – ओउम्, बाप रे! (त्रिमात्रिक)

- **व्यंजन वर्ण –**

स्वरों की सहायता से उच्चारित होने वाले वर्ण 'व्यंजन' कहलाते हैं। हिंदी में इसकी संख्या 33 मानी जाती है –

- स्पर्श व्यंजन –

क वर्ग– क, ख, ग, घ, ङ

च वर्ग – च, छ, ज, झ, ञ

ट वर्ग – ट, ठ, ड, ढ, ण

त वर्ग – त, थ, द, ध, न

प वर्ग – प, फ, ब, भ, म

अंतःस्थ व्यंजन– य, र, ल, व

उष्म व्यंजन– श, ष, स, ह

= 33 (मूल व्यंजन)

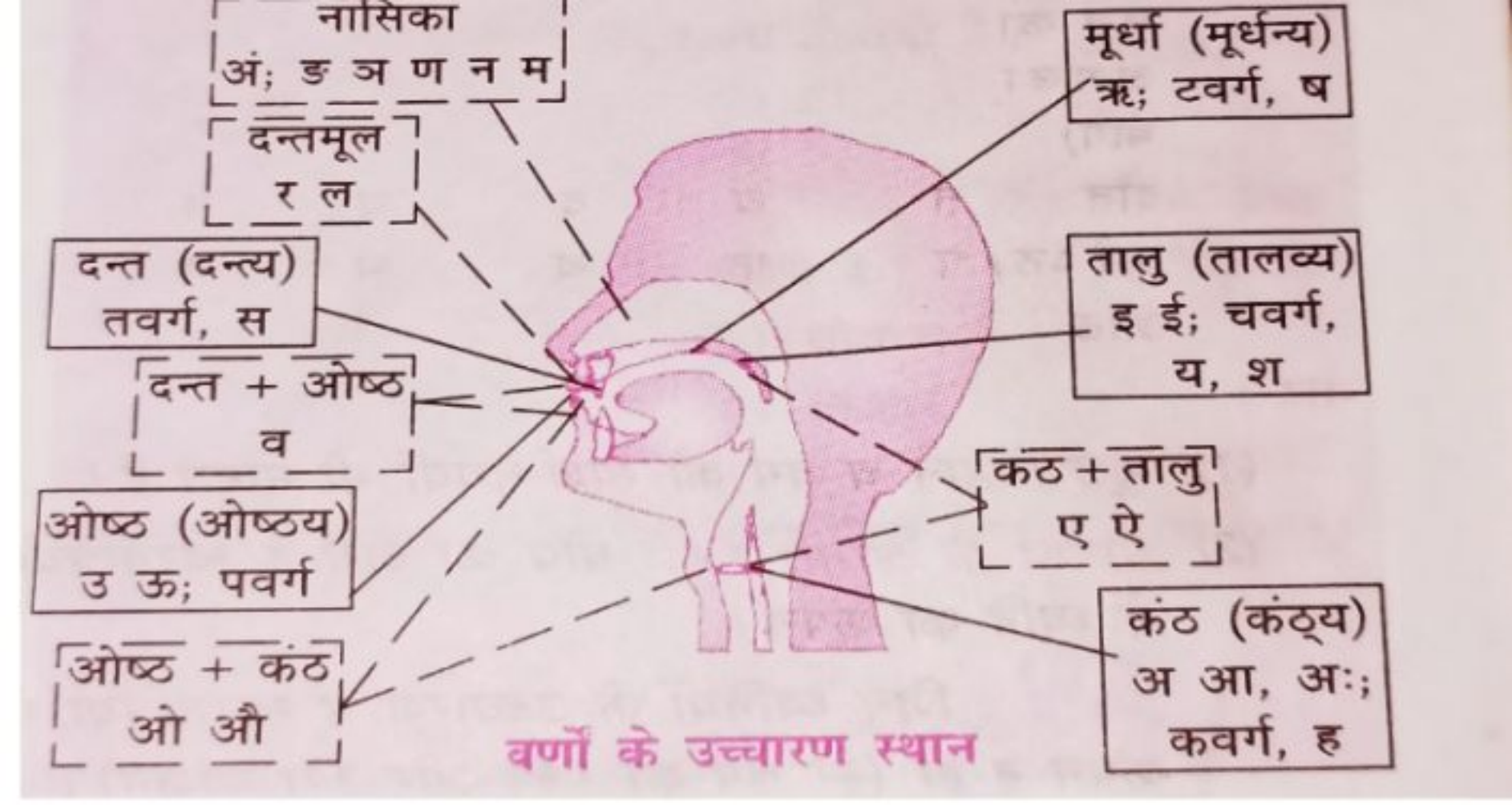

वर्णों के उच्चारण स्थान

उच्चारण में वायुप्रक्षेप की दृष्टि से व्यंजनों के दो भेद हैं–

1. अल्पप्राण – जिन ध्वनियों के उच्चारण में मुख से कम हवा निकले। (हर वर्ग का 1ला, 3रा, 5वाँ व्यंजन जैसे- क, ग, ङ, च, ज, ञ, य, र, ल, व)
2. महाप्राण – जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से अधिक हवा निकले। (हर वर्ग का 2रा और 4था व्यंजन जैसे – ख, घ, छ, झ, श, ष, स, ह)

घोषत्व के आधार पर-

1. घोष/सघोष – जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन या झंकृत हो। (हर वर्ग का 3रा, 4था, 5वाँ वर्ण जैसे- ग, घ, ङ , सभी स्वर वर्ण, य, र, ल, व, ह)
2. अघोष – जिन व्यंजन वर्णों के उच्चारण में स्वरतंत्रियाँ कंपन या झंकृत न हो। (हर वर्ग का 1ला, और 2रा जैसे – क, ख, च, छ, श, ष, स)

धन्यवाद